शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.036

# भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों पर सोशल मीडिया का प्रभावः एक अध्ययन

प्राप्तिः 21.05.2026
स्वीकृतः 18.06.2026

36

**रूपल शर्मा**
शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग)
मेरठ कॉलेज,
मेरठ, उ0प्र0
ईमेलः *rupalmcm@gmail.com*

**प्रो सतीश कुमार**
शोध निर्देशक (राजनीति विज्ञान विभाग)
मेरठ कॉलेज,
मेरठ उ0प्र0

***सारांश***

*भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी संस्कृति है, जो अपने अन्दर अमूल्य रत्नों को समेटे हुए है। विविधता में एकता, बड़ों के प्रति आदर, छोटों के प्रति प्यार और आध्यात्मिक गहराई जैसे मूल्यों में निहित तथा साथ–ही–साथ इसमें विभिन्न रीति–रिवाज, त्यौहर, संगीत, नृत्य और व्यंजन शामिल है जो विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न होते हैं। हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म हमारे देश में उत्पन्न हुये जिन्होनें हमारी संस्कृति को प्रभावित किया। भारत का साहित्य, वास्तुकला और वैज्ञानिक प्रगति इसकी बाहरी सांस्कृतिक, विरासत को दर्शाती है। भारतीय संस्कृति के अन्दर लोगों में सदाचार उत्पन्न करने के लिये नैतिक मूल्य तत्व विद्यमान है तथा साथ–ही–साथ भारतीय नागरिक को सुसंस्कृत बनाने के लिये शिक्षा का विशेष योगदान है। नैतिक मूल्य मानव व्यवहार आौर निर्णय लेने का मार्गदर्शन करते हैं। वे व्यक्तियों के कार्यों, अंतः क्रियाओं और सही या गलत, अच्छे या बुरे के बारे में दृष्टिकोण को आकार देते हैं। सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक परम्पराओं में निहित ईमानदारी, दयालुता, न्याय और सम्मान जैसे नैतिक मूल्य नैतिक समाजों को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नैतिक मूल्यों को आत्मसात करके कोई भी नागरिक अपने जीवन को सुलभ तथा सज्जनता के शिखर तक ले जा सकता है। जीवन में जितना महत्त्व नैतिक मूल्यों का है उतना ही महत्त्व शिक्षा का भी है। शिक्षा व्यक्तिगत जीवन का एक मूलभूत स्तम्भ है, जो व्यक्तियों के ज्ञान, कौशल और मूल्यों को आकार देती है। यह सशक्तिकरण, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और आजीवन सीखने को बढ़ावा देने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है परन्तु तकनीकि युग में सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्म्स ने युवाओं और समाज के सभी वर्गों के सोचने, व्यवहार करने और अभिव्यक्त होने के तरीको को तेजी से बदल दिया है। सोशल मीडिया ने पारम्परिक मूल्यों को कहीं प्रोत्साहित किया तो कहीं उनका क्षरण भी किया है। यह शोध पत्र इसी परिवर्तनशील प्रभाव का विश्लेषण करता है।*

***मुख्य शब्द***

*भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य, न्याय, अहिंसा, दयालुता, डिजिटल शिक्षा, सोशल मीडिया।*

**प्रस्तावना**

भारत देश अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिए विश्व विख्यात है। भारत की सभ्यता व संस्कृति से देश क्या विदेशों में भी बदलाव के चिन्ह् दिखाई पड़ते हैं। भारतीय संस्कृति पारस्परिक प्रेम व सद्भाव को बढ़ाती है तथा मन में सकारात्मकता का संचार करती है। भारत विविध परम्पराओं, गहरी नैतिक मूल्यों और मजबूत शैक्षिक विरासत का देश है। देश की संस्कृति इनके प्राचीन इतिहास, धार्मिक दर्शन और सामाजिक मानदंड़ों से आकार लेती है, जो इसे दुनिया की सबसे पुरानी और सबसे गहन सभ्यताओं में से एक बनाती है। भारतीय समाज नैतिक मूल्यों पर बहुत जोर देता है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ते हैं। बड़ों के प्रति सम्मान भारतीय परिवार का प्रमुख सिद्धान्त है। सत्य और ईमानदारी से प्रेरित महात्मा गाँधी जैसे व्यक्तित्व ने जिन्होनें सत्य और अहिंसा को कायम रखा है। करूणा और दयालुता धार्मिक शिक्षाओं और महाकाव्यों के माध्यम से सिखाई जाती है। आत्मानुशासन और कर्त्तव्य एक ऐसी अवधारणा है जो व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में जिम्मेदारी पर जोर देती है। इसके साथ शिक्षा इन नैतिक मूल्यों से आत्मसात करने का मार्ग दिखाती है। शिक्षा का महत्त्व मानवीय जीवन में जितना प्राचीन काल में था उतना ही आधुनिक काल में बना हुआ है। प्राचीन काल से ही शिक्षा भारतीय समाज की आधार शिला रही है, तक्षशिला और नालंदा जैसे संस्थान दुनिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से हैं। आज भारत की शिक्षा प्रणाली एक संरचित प्रारूप का अनुसरण करती है। पष्चिमी जीवन शैली और उपभोक्ता संस्कृति के निरन्तर सम्पर्क में रहने से कभी–कभी पारम्परिक मूल्यों जैसे बुजुर्गों के प्रति सम्मान, पारिवारिक एकजुटता और विनम्रता कमजोर हो जाती है।

**शोध प्रश्न**

1. भारतीय सांस्कृतिक मूल्य क्या–क्या हैं ?
2. भारतीय संस्कृति पर सोशल मीडिया का क्या प्रभाव पड़ता है ?
3. सोशल मीडिया के भारतीय संस्कृति पर नकारात्मक प्रभाव को कम करने के क्या सुझाव है ?
4. पश्चिमी देशों पर भारतीय संस्कृति का क्या प्रभाव पड़ता है ?

**भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यः–** भारतीय संस्कृति में नैतिक मूल्यों को शिक्षा के एक अनिवार्य अंग के रूप में लम्बे समय से महत्त्व दिया है। हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म और इस्लाम जैसे धर्मों से प्रभावित देश की समृद्ध विरासत ने एक मूल्य प्रणाली को आकार दिया है, जो धार्मिकता, सम्मान और जिम्मेदारी को बढ़ावा देती है। भारतीय संस्कृति में अनेक नैतिक मूल्य विद्यमान है जिनका वर्णन इस प्रकार हैः–

1. **सत्य–** सत्यमेव जयते यह उक्ति तो हम अपने दैनिक जीवन में नित्य सुनते है। सत्य बोलना किसी से झूठ न कहना एक महत्त्वपूर्ण नैतिक मूल्य है। महात्मा गाँधी ने सत्यवादिता का पाठ भारत के नागरिकों को पढ़ाया। भारतीय दर्शन में सत्यवादिता को सर्वोच्च गुण माना गया है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.036

2. **अहिंसा–** हिन्दू धर्म हो, बौद्ध धर्म हो या जैन धर्म हो ये धर्म हमेशा अहिंसा की सीख देते हैं। तभी कहा गया है ''अंहिसा परमों धर्म''। किसी भी मनुष्य के साथ हिंसा न करना ना तन से ना विचारों से, महात्मा गाँधी जी ने ऐसी ही अंहिंसा का विचार प्रतिपादित किया था, गाँधी जी तो अपने आन्दोलनों में क्रान्तिकारियों को अहिंसा का पालन करने के लिये कहते थे इसका ही यह परिणाम हुआ कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हिंसा होने के कारण उसको स्थगित कर दिया था इसलिये उनके विचार व विभिन्न धर्म हमें करूणा और दया सिखाते है।

3. **गुरू–शिष्य परम्परा–** यह परम्परा गुरूकुल प्रणाली से प्रारम्भ मानी जाती है। गुरूकुल प्रणाली में शिष्य गुरू को पिता तुल्य मानकर उनकी सेवा करते हैं तथा गुरू भी शिष्यों को पुत्र समान मानकर उनका मार्गदर्शन व एक कुशल नागरिक बनाने में योगदान देते हैं। भारतीय संस्कृति में गुरूजनों और शिक्षकों के प्रति आज्ञाकारिता और आदर को महत्त्व दिया जाता है।

4. **कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व–** भारतीय नागरिक हो या किसी भी देश के निवासी हो उनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्व का पालन करना है। प्रत्येक नागरिक का ये कर्त्तव्य होता है कि वह अपने देश में लागू सिद्धान्तों का पालन करें। प्रत्येक व्यक्ति से परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है।

5. **विनम्रता और सरलता–** स्वामी दयानन्द हो, विवेकानन्द और संत कबीर हो उन्होनें सभी लेागों के विचारों में विनम्रता और सरलता को अपनाना बहुत जरूरी बताया है क्योंकि विचारों में आई विनम्रता व सरलता से हमारा जीवन शालीनता से भर जाता है और जीवन सरल बन जाता है।

6. **आत्म–अनुशासन–** जीवन को संयमित बनाने के लिए जीवन को आत्म–अनुशासन में चलाना बहुत जरूरी है। शास्त्रों में कड़ी मेहनत और आत्म–अनुशासन पर प्रकाश डाला गया है। गुरूकुल पद्धति में शिष्यों को शिक्षा के साथ–साथ आत्म–अनुशासन भी सिखाया जाता था।

**पश्चिमी देशों पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव**

भारतीय संस्कृति ने पश्चिमी देशों को विभिन्न पहलुओं में महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है, जिनमें भोजन, फैशन, आध्यात्मिकता, मनोरंजन और व्यापार शामिल हैं। पश्चिमी देशों पर भारतीय संस्कृति के प्रभाव के कुछ प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार हैः

**1. योग और अध्यात्म**

योग जिसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी शारीरिक स्वस्थता और मानसिक कल्याण के लिए पश्चिम में व्यापक रूप से प्रचलित है। आज में समय माननीय प्रधान मंत्री जी योग को पूरे विश्व में प्रसारित कर रहे हैं। प्रधान मंत्री जी ने योग को एक विश्व अभियान बना दिया है। योग मानसिक शान्ति के साथ–साथ शारीरिक रोगो से भी निदान दिलाता है। अध्यात्म ईश्वर की प्राप्ति के साथ–साथ नकारात्मक विचारों को मस्तिष्क से दूर करता है।

**2. व्यंजन**

भारतीय भोजन विशेषकर कढ़ी, नान, समोसे व बिरयानी जैसे व्यंजन दुनियाभर में लोकप्रिय हैं। हल्दी, जीरा और इलायची जैसे मसाले अब पश्चिमी व्यंजनों में आमतौर पर इस्तेमाल किये जाते हैं। पश्चिम में शाकाहार और पौधे आधारित आहार का उदय भारतीय आहार परम्पराओं से प्रभावित है।

**3. फैशन और वस्त्र**

भारतीय परिधान शैलियाँ जैसे साड़ी, कुर्ता और लहंगा वैश्विक फैशन आयोजनों में पहने जाते है चाहे वो मिस–वर्ल्ड की प्रतियोगिता हो, मिस इण्डिया और मिस यूनिवर्स प्रतियोगितायें हो उनमें प्रतिभागी भारतीय परिधानों को व्याख्यायित करते है। भारतीय वस्त्र, कढ़ाई और रेशम और सूती जैसे कपड़ों ने पश्चिमी फैशन डिजाईन को प्रभावित किया है।

**4. त्यौहार एवं मिष्ठान**

दिवाली और होली कई पश्चिमी देशों में भारतीय और गैर भारतीय दोनों समुदायों द्वारा मनाई जाती है। रंगीन रंगोली और पारम्परिक मिठाईयां जैसी भारतीय परम्पराओं ने वैश्विक उत्सवों स्थान आया है। भारतीय त्यौहार आपसी भाईचारें का संदेश देते हुए पश्चिमी देशों में भी अपनी धाक जमाये हुए हैं।

**5. कथक, भरतनाट्यम और बालीवुड**

इन शैलियों जेसे नृत्य रूपों को पश्चिमी प्रदर्शनों में तेजी से शामिल किया जा रहा है। ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड और यूसीएलए जैसे विश्वविद्यालयों में भारतीय नृत्य शैलियों पर कोर्स पढ़ाये जाते हैं कई विदेशी विद्यार्थी भारत आकर नाटयशास्त्र, कथक और भरतनाट्यम जैसे विधाओं में प्रशिक्षण लेते हैं। अमेरिका, कनाड़ा, यूके और आस्ट्रेलिया में भारतीय प्रवासी समुदाय ने सांस्कृतिक केन्द्रों और संस्थाओं के माध्यम से नृत्य का प्रचार किया है। वैश्वीकरण, प्रवासी भारतीयों और अर्न्तराष्ट्रीय मीडिया के प्रभाव से इन शैलियों का पश्चिमी देशों पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

**सोशल मीडिया का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव**

भारतीय संस्कृति पर भारतीय मीडिया के बहुआयामी प्रभाव हैं, जो संचार और सम्पर्क से लेकर सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक व राजनीतिक अवधारणाओं तथा समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। दुनिया में बहुत से देशों की तरह भारत में भी सोशल मीडिया के प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के निष्कर्ष देता है।

**सकारात्मक प्रभाव**

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने भारतीयों के संवाद और एक–दूसरे से जुड़ने के तरीके में क्रांति ला दी है। इसने भौगोलिक दूरियों को पाट दिया है, जिससे मित्रों और परिवारजनों की दूरी की परवाह किए बिना सम्पर्क में रहने की सुविधा मिलती है। सोशल मीडिया भारतीयों को अपनी संस्कृति व सभ्यता को प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान करता है जिसके माध्यम से लोग अपने पारम्परिक रीति–रिवाजों, कलारूपों और त्यौहारों को वैश्विक पटल पर रखते है जिससे भारतीय संस्कृति संरक्षित होती है। भारतीय लोग अपनी संस्कृति, इतिहास और परम्पराओं के बारे में सोशल मीडिया के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यू–टयूब जैसे प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता ने योग, आयुर्वेद और व्यंजनों जैसी भारतीय प्रथाओं की वैश्विक अपील में योगदान दिया है। लोक कलाकर, बुनकर, शिल्पकार जो दशकों तक सीमित थे, अब उनका सोशल मीडिया के माध्यम से अपने कार्यों को व्यापक स्तर पर दिखा रहे हैं। इससे उन्हें पहचान और आर्थिक सहयोग मिल रहा है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.036

धार्मिक प्रवचन, आध्यात्मिक विचार, संस्कारों की महत्ता आदि विषयों पर सामग्री उत्पन्न होने से नई पीढ़ी में नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ रही। नैतिक मूल्य चरित्र का निर्माण करते हें तथा अशुद्ध विचारों को खत्म कर शुद्ध विचार का संचार करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से ही क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री बढ़ने से भाषाई विविधता को नया जीवन मिलता है। ऑनलाईन वेबिनार, व्याख्यान और चर्चाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति पर विद्वानों की बातें युवा आसानी से सुन सकते है, जिससे उन्हें संस्कृति से जुड़ने का अवसर मिलता है।

सोशल मीडिया शिक्षा और ज्ञान के प्रचार के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है जिससे छात्र और शिक्षक एक–दूसरे से जुड़ सकते हैं और शैक्षिक संस्थानों तक पहुँच सकते हैं। सोशल मीडिया ऑनलाईन पाठ्यक्रम और ट्यूटोरियल जैसे शैक्षिक संस्थान प्रदान करती है जिससे वैश्विक दर्शकों के लिए सीखना सुलभ हो जाता है। शैक्षिक अवसरों के साथ–साथ स्थानीय और विश्वव्यापी स्तर पर मानवीय और सामाजिक उद्देश्यों के लिए सामाजिक जागरूकता पहल और वकालत के प्रयास भी होते हैं। सोशल मीडिया का उपयोग अधिवक्तताओं को वैश्विक दर्शकों तक आसानी से पहुँचने और उन सामाजिक मुद्दों के समाधानों पर चर्चा करने में सक्षम बनाता है जो जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

सोशल मीडिया व्यवसायों, व्यक्तियों और गैर लाभकारी समूहों के लिए इस प्रकार के मार्केटिंग अवसर प्रदान करता है। व्यवसाय ब्रॉड प्रचार, मार्केटिंग अभियानों और ग्राहक जुड़ाव के लिए व्यापक दर्शकों वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का लाभ उठा सकते हैं।

**नकारात्मक प्रभाव**

पश्चिमी संस्कृति और सोशल मीडिया के माध्यम से वैश्विक रूझानों का प्रभाव कभी–कभी पारम्परिक भारतीय संस्कृति मूल्यों और प्रथाओं के क्षरण का कारण बन सकता है। सोशल मीडिया गलत सूचना, रूढ़िवादिता और सांस्कृतिक गलत फहमियों का एक प्रजनन स्थल है। भारतीय संस्कृति के बारे में झूठे आख्यान और रूढ़िवादिताऐं तेजी से फैल सकती है।

सोशल मीडिया एक ऐसा उपकरण है जिसका अत्यधिक उपयोग खासकर युवाओं में लत का कारण बन सकता है और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर निजता भंग, साईबर बदमाशी और उत्पीड़न का व्यक्तियों और समुदायों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। भारतीय संस्कृति में परिवार, बडों का सम्मान, धार्मिक आस्था और नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया जाता है। सोशल मीडिया पर पाश्चात्य संस्कृति का अत्यधिक प्रचार–प्रसार हो रहा है जिससे युवा वर्ग इन मूल्यों को पुराना और अप्रासंगिक मानने लगा है।

सोशल मीडिया पर इस हद तक दिखावा होता है जिसका परिणाम यह हुआ कि युवा वास्तविकता और मूल सांस्कृतिक पहचान से दूर होते जा रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर झूठी खबरें व अपवाहें इतनी तेजी से फैलती है कि इससे समाज में असहिष्णुता और साम्प्रदायिक तनाव बढ़ते हैं, जो भारतीय संस्कृति की सहिष्णुता और एकता के विरूद्ध है।

भारतीय संस्कृति की एक विशेषता है पारिवारिक मेलजोल, रिश्तों की गर्माहट और साथ बैठकर भोजन करना। यह इतना महत्त्वपूर्ण माना जाता है कि यह विशेषताऐं परिवार की एकता को

प्रदर्शित करती थी, लेकिन सोशल मीडिया की लत ने लोगों को आभासी दुनिया में सीमित कर दिया है, जिससे पारिवारिक समय और संबंध कमजोर हो रहे हैं।

साइबर बुलिंग जैसी गम्भीर समस्याओं ने किशोरों के बीच आत्महत्या के मामलों को भी जन्म दिया है। इसके अलावा साइबर बुलिंग जैसे कृत्य में संलग्न किशोर मादक पदार्थों के सेवन, आक्रामकता और आपराधिक कृत्य में संलग्न होने के प्रति भी संवदेनशील होते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में किये अध्ययन में पाया गया है कि सर्वेक्षण में शामिल सभी अमेरिकी बच्चों में से लगभग आधे ने संकेत दिया कि उन्हें ऑनलाईन रहते हुए असहज महसूस कराया गया, उन्हें धमकाया गया। एक अन्य अध्ययन मे यह पाया गया कि ऑनलाइन यौन शोषण के शिकार लोगों मे से 50 प्रतिशत से अधिक 12 से 15 वर्ष की आयु के बीच के थे।

वर्ष 2019 में जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत के लोग औसतन 2–4 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं। जिस प्रकार भारत में इसका प्रयोग बढ़ता जा रहा है तो वह दिन दूर नहीं कि जब हम इस क्षेत्र में नम्बर वन होंगें, परन्तु वहाँ तक पहुँचने को हम क्या कुछ खो चुके होंगें इसका अनुमान लगाना संभव नहीं है।

**सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के सुझाव**

स्कूल और कॉलेज स्तर पर डिजिटल नैतिकता से संबंधित शिक्षा दी जाए। युवा पीढ़ी को यह सिखाया जाये की किस प्रकार सोशल मीडिया का संतुलित और जिम्मेदार उपयोग किया जाए।

परिवारों में सांस्कृतिक मूल्यों और परम्पराओं पर नियमित रूप से चर्चा होनी चाहिए तथा बुजुर्गो द्वारा बच्चों को भारतीय परम्पराओं, त्यौहारों और रीति–रिवाजों के महत्त्व को समझाना चाहिए।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भारतीय संस्कृति, भाषा, योग, आयुर्वेद व साहित्य आदि से संबंधित रचनात्मक और सकारात्मक सामग्री को बढ़ावा देना चाहिए। झूठी खबरें, अश्लील सामग्री और सांस्कृतिक अपमान को फैलाने वाले अकाउन्ट के विरूद्ध कठोर कार्यवाही करनी चाहिए तथा सरकार और सोशल मीडिया कम्पनियों द्वारा मिलकर नियम और गाइडलाइंस का सख्त पालन करवाना चाहिए।

सोशल मीडिया उपयोग पर समय–सीमा निर्धारित की जानी चाहिए (जैसे एक दिन में एक घंटे) सप्ताह में एक दिन डिजिटल डिटॉक्स डे के रूप में मनाना चाहिए व्यक्ति अपने परिवार और संस्कृति के साथ समय बिताए।

**निष्कर्ष**

सोशल मीडिया ने भारतीय समाज को अभिव्यक्ति, संवाद और जानकारी के नये आयाम प्रदान किये हैं। इसके माध्यम से वैश्विक स्तर पर विचारों, परम्पराओं और जीवन शैलियों का आदान–प्रदान संभव हुआ है परन्तु इसने पारम्परिक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों जैसे कि पारिवारिक एकता, सम्मान, संयम, सहिष्णुता और सामूहिकता पर गहरा प्रभाव डाला है। जहाँ एक और सोशल मीडिया ने युवाओं में जागरूकता, नवाचार और सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा दिया है, वही दूसरी और इसने भोगवाद, व्यक्तिगतता और सांस्कृतिक विकृति की प्रवृत्ति को भी जन्म दिया है। भारतीय संस्कृति के मूल में निहित नैतिकता और आध्यात्मिकता सोशल मीडिया की चमक–दमक और तात्कालिकता के सामने कही–कही कमजोर पड़ती दिखायी देती है। अतः आवश्यक है कि हम

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.036

सोशल मीडिया के उपयोग में संयम और विवेक अपनायें ताकि यह आधुनिकता और परम्परा के बीच एक सेतु का कार्य करें ना की विभाजन का। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को डिजीटल युग के अनुरूप पुनः परिभाषित कर उनका संरक्षण करना ही वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

**सन्दर्भ**


1. त्रिपाठी, वी. (2015). भारतीय संस्कृति और मीडिया नई दिल्लीः भारती प्रकाशन
2. मिश्रा, एस. (2017). सोशल मीडिया और संस्कृति प्रभाव एवम परिप्रेक्ष्य वाराणसीः गंगौत्री प्रकाशन
3. शर्मा, आर. (2019). डिजीटल युग में भारतीय सामाजिक मूल्य जयपुरः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास
4. वाजपेयी, एन. (2016). भारतीय समाज और संस्कृति दिल्लीः साहित्य भवन
5. अग्रवाल, एम. (2018). मीडिया और सास्कृतिक परिवर्तन नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन
6. जोशी, डी. (2020). भारतीय पारम्परिक मूल्य और आधुनिक तकनीक लखनऊः गंगा पब्लिकेशन प्रकाशन
7. तिवारी, ए. (2021). सोशल मीडिया सांस्कृतिक परिवर्तन की दिशा. बनारसः वदिया प्रकाशन
8. चर्तुवेदी, के. (2014). भारतीय परम्परा और आधुनिकता भोपालः मध्य भारत प्रकाशन